आज़ादी का अमृत महोत्सव

बैंक ऑफ़ इंडिया

रिश्तों की जमापूँजी

हम कृतज्ञ हैं

उन सभी ज्ञात एवं अज्ञात

स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों

के प्रति जिन्होंने अपना

सर्वस्व न्यौछावर कर

देश की आजादी

का मार्ग प्रशस्त किया।

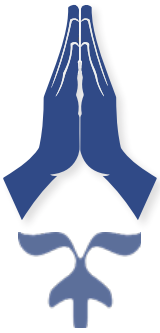

बैंक ऑफ़ इंडिया

रिश्तों की जमापूँजी

ए. के. दास
एमडी एवं सीईओ

A.K. Das
MD & CEO

बैंक ऑफ़ इंडिया BOI
Bank of India

दिनांक : 05-08-2021

संदेश

प्रिय साथियों,

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारा देश अपनी आज़ादी के 75 वर्ष पूरे करने जा रहा है और देश में आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता है कि हमारे राजभाषा विभाग ने इस अवसर पर स्वतंत्रता संग्राम की विकास गाथा को संकलित कर यह पुस्तिका प्रकाशित की है। इसके माध्यम से हमने उन ज्ञात-अज्ञात स्वतंत्रता संग्राम सैनानियों को याद करते हुए उनके प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करने का प्रयास किया है, जिन्होंने अपना सब कुछ न्यौछावर कर देश की आजादी का मार्ग प्रशस्त किया। मुझे विश्वास है कि इस पुस्तिका से आपको भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को क्रमबद्ध रूप से समझने और अपना सर्वस्व बलिदान करने वाले देश के महान सपूतों का परिचय प्राप्त करने में मदद मिलेगी। इसमें हमारे बैंक के इतिहास के बारे में भी संक्षेप में उल्लेख किया गया है जिससे बैंक के विकास और उपलब्धियों की जानकारी भी आपको मिलेगी ।

मनुष्य स्वभाव से ही बंधनमुक्त रहना चाहता है। वस्तुत: दासत्व एक बड़ा अभिशाप है। परतंत्रता का दंश हमारे पूर्वजों ने किस प्रकार बर्दाश्त किया, उसकी पीड़ा को वे ही समझ सकते थे। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी राष्ट्रीय और सामाजिक सुव्यवस्था को मजबूत बनाए रखने एवं आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना के अनुरूप कार्य करने का हर संभव प्रयास करें।

आइए, आज़ादी के अमृत महोत्सव में हम सब मिलकर अपनी संस्था को, अपने राष्ट्र को नई ऊँचाइयों पर ले जाने का संकल्प लें।

शुभकामनाओं के साथ,

भवदीय,

(ए. के. दास)

स्वरूप दासगुप्ता
कार्यपालक निदेशक
Swarup Dasgupta
Executive Director

बैंक ऑफ़ इंडिया Bank of India BOI

दिनांक : 05-08-2021

संदेश

प्रिय साथियों,

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि 75वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हमारे राजभाषा विभाग ने स्वतंत्रता संग्राम की परिचयात्मक बुकलेट तैयार की है।

आप जानते ही हैं कि स्वतंत्रता संग्राम का हमारे देश के आर्थिक परिदृश्य पर भी गहरा असर पड़ा। देश की आजादी के प्रयासों के दौरान ही 07 सितम्बर, 1906 को हमारे बैंक की स्थापना हुई थी। उस समय देश में "स्वदेशी" आंदोलन की लहर चल रही थी तथा देश के प्रमुख कारोबारियों ने भी इस तथ्य को समझ लिया था कि ब्रिटिश कारोबारी हित, स्वदेशी कारोबारी हित से अलग हैं। इसी पृष्ठभूमि में हमारे बैंक के साथ-साथ कुछ अन्य स्वदेशी बैंकों का भी उदय हुआ था।

हमारी सरकार द्वारा **"आत्मनिर्भर भारत अभियान"** चलाया जा रहा है तथा उसके माध्यम से अर्थव्यवस्था को नई दिशा देने का प्रयास किया जा रहा है। स्वदेश स्तर पर, बैंक की स्थापना की मूल भावना के अनुरूप भारत सरकार के आत्मनिर्भर अभियान में योगदान करते हुए स्वदेशी कारोबारियों, बेरोजगार नवयुवकों, एमएसएमई इकाइयों, उद्योगों को गुणवत्तापूर्ण ऋण देना चाहिए और देश के आर्थिक स्वास्थ्य को मजबूत बनाने हेतु अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान करना चाहिए।

एतद्द्वारा मैं आप सब से यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि आप अपनी एवं अपने परिवारजनों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए जल्द से जल्द टीकाकरण करा लें एवं कोविड संबंधी सभी प्रोटोकॉल का पालन करते हुए विभिन्न लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ते रहें।

शुभकामनाओं के साथ,

भवदीय,

(स्वरूप दासगुप्ता)

प्रमोद कुमार द्विवेदी
महाप्रबंधक
Pramod Kumar Dwibedi
General Manager

बैंक ऑफ़ इंडिया Bank of India BOI

दिनांक : 05-08-2021

संदेश

प्रिय साथियों,

आप सब जानते ही हैं कि 15 अगस्त 2021 को हम 75वां स्वतंत्रता दिवस मना रहे हैं। भारत सरकार इसे "**आजादी का अमृत महोत्सव**" के रूप में मना रही है। तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में कहा है - "**पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं**" अर्थात् पराधीनता में कोई सुख नहीं है, अत: यह बिल्कुल सत्य है कि आजादी किसी अमृत महोत्सव से कम नहीं है।

हम सब आजादी की कीमत को बहुत अच्छी तरह से जानते हैं। आजादी की जंग में शामिल भारतीयों को अनेक यातनाएं सहनी पड़ी और कुर्बानियां देनी पड़ी, हमें यह तथ्य भूलना नहीं चाहिए। आज की युवा पीढ़ी के हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों को आजादी के संघर्ष से परिचित कराने के उद्देश्य से हमारे राजभाषा विभाग द्वारा यह पुस्तिका तैयार की गई है। मुझे उम्मीद है कि आप सब को यह पुस्तिका पसंद आएगी।

यह आजादी का ही सुपरिणाम है कि पिछले अनेक दशकों में देश ने स्वतंत्र आर्थिक नीति का पालन करते हुए अकल्पनीय प्रगति प्राप्त की है। आर्थिक उन्नति की गाथा में हमारे बैंक की भी उल्लेखनीय भूमिका रही है। कोरोना महामारी की इस संकटकालीन स्थिति में भी बैंक ने अपनी विभिन्न योजनाओं के माध्यम से आम लोगों का जीवन आसान किया है। साथ ही विभिन्न प्रकार के उद्योगों को भी राहत दी गई है।

देश के महान सपूतों को श्रद्धांजलि देते हुए आइए हम सब मिलकर राष्ट्र एवं अपनी संस्था के विकास के लिए स्वयं को अर्पित करें।

शुभकामनाओं के साथ,

भवदीय,

(प्रमोद कुमार द्विवेदी)

प्रस्तावना

15 अगस्त 2021 को 75वां स्वतंत्रता दिवस है। भारत सरकार इसे "**आजादी का अमृत महोत्सव**" के रूप में मना रही है। भारत का स्वतंत्रता संग्राम पूरे विश्व के लिए प्रेरणा एवं अनुकरण की एक मिसाल रहा है। इस संग्राम में ऐसे लाखों सेनानियों ने अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया जिनका हम नाम तक नहीं जानते परन्तु उन सब के आदर्श एवं लक्ष्य एक ही ध्येय के लिए थे तथा वह ध्येय था भारत की स्वतंत्रता।

संविधान के "**भाग IV क**" में यह हमारा मूलभूत कर्तव्य बताया गया कि हम "राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को अपने हृदय में स्थान दें एवं उनका पालन करें।" [संविधान, भाग 4 क, 51 क, (ख)] इसी परिप्रेक्ष्य में 75वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हम आगामी पृष्ठों में अपनी स्वतंत्रता के लिए किए गए राष्ट्रीय आंदोलन को याद करेंगे।

आजादी के लिए जो आंदोलन हुआ है, उसके विविध रूप थे। जहाँ एक ओर इसके माध्यम से आम भारतीयों में राजनैतिक चेतना को जगाया गया वहीं दूसरी ओर आंदोलन में सांस्कृतिक, सामाजिक तथा आर्थिक उत्थान के कार्यक्रमों को भी शामिल किया गया। इस प्रकार हमारा राष्ट्रीय आंदोलन एक समग्र मुक्ति संग्राम था तथा इसके आदर्शों का पालन करके हम आज भी लाभान्वित हो रहे हैं और आगे भी इससे लाभ ही मिलेगा। यही इसकी सार्वकालिक प्रासंगिकता है।

1947 के बाद हमारे राष्ट्रीय आंदोलन ने कई अफ्रीकी देशों को अपने स्वतंत्रता युद्ध हेतु प्रेरणा दी। इतना ही नहीं हमारे राष्ट्रीय आंदोलन ने अमेरिकी नागरिक अधिकार आंदोलन (1955-1968) को भी प्रेरित किया। अत: आज के समय में भी, पूरी दुनिया में हमारे राष्ट्रीय आंदोलन के विषय में जानने की इच्छा है तथा भारतीय होने के नाते हमें भी इससे अवश्य परिचित होना चाहिए।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

पुर्तगाली ऐसे पहले यूरोपीय थे जो सन् 1498 ई. में भारत आये। सन् 1510 तक वे गोवा पर अधिकार कर चुके थे। पुर्तगालियों के बाद डच, अंग्रेज, डेन तथा फ्रांसीसी भारत आये। परन्तु एक के बाद एक हुए युद्धों में जीत के बाद अंग्रेज ही हमारे देश के सबसे अधिक भाग पर वर्चस्व स्थापित करने में सफल हुए। अंग्रेजों ने 1759 में **"वेदरा के निर्णायक युद्ध"** में डचों को पराजित कर उन्हें भारतीय व्यापार से बाहर कर दिया। इसी प्रकार अंग्रेजों से 1760 में **"वाण्डिवाश के निर्णायक युद्ध"** में फ्रांसीसियों को हराकर उन्हें भारतीय व्यापार से बाहर कर दिया। डेन लोगों ने 1845 में अपनी भारतीय वाणिज्यिक कंपनी अंग्रेजों को बेच दी और भारत से बाहर चले गये। इस प्रकार यूरोपीय कंपनियों में से, प्रमुख रूप से अंग्रेजों की ईस्ट इंडिया कंपनी का वर्चस्व ही भारत में शेष रहा।

ईस्ट इंडिया कंपनी ने केवल अपने यूरोपीय प्रतिद्वंद्वियों को ही पराजित नहीं किया अपितु धीरे-धीरे भारतीय राज्यों को भी अपने नियंत्रण में लेने लगे। कंपनी अब केवल वाणिज्यिक गतिविधियों में ही शामिल नहीं थी अपितु वह राजनैतिक सत्ता विस्थापन में प्रत्यक्ष रूप से शामिल हो गई। 1757 के **"प्लासी के युद्ध"** में विजय के बाद एक प्रकार से कंपनी का पूरे बंगाल पर नियंत्रण हो गया। अंग्रेजों ने 1764 में **"बक्सर के युद्ध"** में अवध के नवाब (शुजाउद्दौला), मुगल सम्राट् (शाह आलम) तथा बंगाल के अपदस्थ नवाब (मीर कासिम) की संयुक्त सेना को पराजित कर दिया तथा युद्ध के बाद कंपनी का शासन, निर्णायक रूप से बंगाल, बिहार और ओडिशा पर स्थापित हो गया। साथ ही अवध का नवाब अंग्रेजों का कृपा पात्र बन गया। **तृतीय कर्नाटक युद्ध** (1763) के बाद अंग्रेजों का हैदराबाद तथा कोरोमंडल तट (तत्कालीन कर्नाटक राज्य) पर क्रमश: प्रभाव तथा नियंत्रण स्थापित हो गया। **चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध** (1799) में अंग्रेजों ने टीपू सुलतान को पराजित किया तथा उसके राज्य को हैदराबाद एवं ब्रिटिश राज के बीच बाँट लिया गया। 1802 की **वसई की संधि** तथा **तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध** (1817-18) के बाद अंग्रेजों का गुजरात आदि अनेक क्षेत्रों एवं राज्यों पर नियंत्रण स्थापित हो गया। **प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध** (1845-46) के बाद अंग्रेजों का जलंधर दोआब एवं कश्मीर पर नियंत्रण हो गया। अंग्रेजों ने कश्मीर को गुलाब सिंह को

बेच दिया। **द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध** (1848-49) में विजय के बाद अंग्रेजों का पूरे पंजाब पर अधिकार हो गया तथा रानी जिंदन एवं उनके 9 वर्षीय पुत्र दिलीप सिंह को लंदन भेज दिया गया। अगस्त 1843 तक **सिंध राज्य** को भी अंग्रेजी साम्राज्य में शामिल कर लिया गया था। **गोरखा युद्ध** (1814-16) में विजय के परिणामस्वरूप अंग्रेज पहले ही नेपाल पर प्रभाव स्थापित कर चुके थे। **द्वितीय आंग्ल-बर्मी युद्ध** (1853) के बाद अंग्रेजों का निचले म्यांमार तथा **तृतीय आंग्ल-बर्मी युद्ध** (1885) के बाद सम्पूर्ण म्यांमार पर नियंत्रण स्थापित हो गया। इस प्रकार हम देखते हैं कि अंग्रेजों की भारत विजय, केवल भारत की विजय न होकर पूरे भारतीय उप महाद्वीप की विजय थी।

1757 के प्लासी युद्ध के बाद रॉबर्ट क्लाइव एवं मीर जाफर की बैठक की फ्रांसिस हेमैन की सुप्रसिद्ध चित्रकारी।

1857 की क्रांति

मुख्य रूप से प्लासी के 1757 के युद्ध में विजय के बाद अंग्रजों का राज भारत पर स्थापित हो गया तथा इसके कारण भारत के राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक जीवन में अनेक बदलाव आये। इन बदलावों के कारण जो वर्चस्व एवं शोषण की श्रृंखला आरंभ हुई, उसके कारण 1757 के कुछ समय बाद से ही अनेक छोटे-छोटे जन-आंदोलन खड़े हुए। इन छोटे-छोटे परन्तु महत्वपूर्ण विद्रोहों के बाद एक बड़ा विद्रोह हुआ जिसे **1857 की क्रांति** कहा जाता है। 1908 में प्रकाशित अपनी पुस्तक (फर्स्ट वार ऑफ इंडियन इंडिपेंडेंस) में श्री वी.डी.सावरकर ने इसे **भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम** बताया तथा इस धारणा को जन्म दिया कि 1857 का विद्रोह एक सुनियोजित राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम था। अंग्रेजों ने इसे **"गदर"** की संज्ञा दी।

पहले 1857 को मात्र एक **"सैन्य विद्रोह"** माना जाता था तथा इसका कारण, सैनिकों की शिकायतें तथा चरबीयुक्त कारतूस को बताया जाता था। परन्तु आधुनिक अध्ययनों से स्पष्ट है कि 1857 की क्रांति के अनेक राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक कारण थे। विद्रोह के राजनैतिक कारणों में डलहौजी की "**व्यपगत नीति (Doctrine of Lapse)**" तथा वेलेजली की "**सहायक संधि**" की नीति की प्रमुख भूमिका थी। **व्यपगत नीति** के अनुसार जिन राजाओं के उत्तराधिकारी नहीं होते थे उन्हें अपने वारिस के रूप में किसी को गोद लेने की अनुमति नहीं थी तथा राजा के स्वर्गवास के बाद अंग्रेज उनके राज्य को ब्रिटिश राज में मिला लेते थे। इस नीति के अंतर्गत डलहौजी ने जैतपुर, सम्भलपुर, झांसी, नागपुर आदि का विलय ब्रिटिश साम्राज्य में कर लिया। **सहायक संधि की नीति** के अनुसार हारे हुए राजाओं या अधीनता स्वीकार कर चुके राजाओं को अपने यहाँ ब्रिटिश फौज रखनी होती थी तथा ब्रिटिश फौज के रखरखाव का खर्च संबंधित राजा को वहन करना पड़ता था। इन सब के कारण देशी राजाओं में भारी असंतोष था। इसके साथ-साथ कर संग्रहण को बढ़ाने के लिए अंग्रेजों द्वारा आरंभ की गई स्थाई बंदोबस्ती, रैयतवाड़ी और महालवाड़ी व्यवस्था से किसानों का जबरदस्त शोषण हुआ और वे निर्धनता के कुचक्र में फंस गये। इसलिए उन्होंने क्रांति में स्थानीय राजाओं का यथासंभव साथ दिया।

पारंपरिक भारतीय प्रणाली एवं संस्कृति की निन्दा तथा ईसाई मिशनरियों के धर्मांतरण आदि गतिविधियां, इस आंदोलन के धार्मिक कारण थे।

क्रांति का आरंभ बैरकपुर छावनी (बंगाल) में हुआ जहाँ मंगल पांडे नामक सिपाही ने चर्बी लगे कारतूस के प्रयोग से इंकार कर दिया। 8 अप्रैल, 1857 को मंगल पांडे को फांसी दे दी गई। 10 मई, 1857 को मेरठ की छावनी में भी कुछ सैन्य टुकड़ियों ने चर्बी लगे कारतूस के प्रयोग से इंकार कर दिया और विद्रोह कर दिया तथा 11 मई 1857 को दिल्ली पहुँचकर उस पर अधिकार कर लिया एवं मुगल सम्राट् बहादुर शाह ज़फ़र को पुन: भारत का सम्राट् तथा विद्रोहियों का नेता घोषित कर दिया। दिल्ली विजय का समाचार, आग की तरह पूरे देश में फैल गया तथा देखते ही देखते कानपुर, लखनऊ, बरेली, जगदीशपुर (बिहार), झांसी, अलीगढ़, रुहेलखण्ड, इलाहाबाद, ग्वालियर आदि में विद्रोह की ज्वाला भड़क उठी। कानपुर में विद्रोह का नेतृत्व बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र **नाना साहब** ने किया तथा **तात्या टोपे** ने उनकी सहायता की। दिल्ली में 82 वर्षीय **बहादुरशाह ज़फ़र** ने **बख्त खाँ** के सहयोग से विद्रोह को नेतृत्व प्रदान किया। लखनऊ में **बेगम हजरत महल** ने ब्रिटिश रेजिडेंसी पर आक्रमण कर दिया। उन्होंने **मौलवी अहमदुल्ला** के साथ शाहजहाँपुर में भी विद्रोह का नेतृत्व किया। झाँसी में **रानी लक्ष्मीबाई** ने विद्रोह की शुरूआत की तथा झाँसी के बाद उन्होंने ग्वालियर में तात्या टोपे के साथ विद्रोह को नेतृत्व प्रदान किया। रानी को वीरगति प्राप्त होने पर जनरल ह्यूरोज ने कहा था - **"भारतीय क्रांतिकारियों में यहाँ सोई हुई औरत, अकेली मर्द है।"**

मंगल पांडे

रानी लक्ष्मीबाई

नाना साहब

बहादुरशाह ज़फ़र

बिहार में **कुंवर सिंह** ने विद्रोह का नेतृत्व किया तथा विद्रोह की मशाल रोहतास, मिर्जापुर, रीवा, बांदा तथा लखनऊ तक ले गये। फैजाबाद में **मौलवी अहमदुल्ला**, रूहेलखण्ड में **खान बहादुर खां**, इलाहाबाद में **लियाकत अली**, बरेली में **खान बहादुर**, असम में **दीवान मनीराम दत्त**, संबलपुर (ओडिशा) में **सुरेन्द्र शाही** तथा **उज्ज्वल शाही,** अजनाला (पंजाब) में **वजीर खां** तथा सतारा में **रंगोजी बापूजी गुप्ते** ने विद्रोह को नेतृत्व प्रदान किया। यद्यपि विद्रोह असफल रहा परन्तु यह आगे के स्वतंत्रता संघर्ष में सदैव प्रेरणा का स्रोत बना रहा।

झाँसी की रानी

सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।
चमक उठी सन सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

कानपूर के नाना की, मुँहबोली बहन छबीली थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह संतान अकेली थी,
नाना के सँग पढ़ती थी वह, नाना के सँग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी।
वीर शिवाजी की गाथायें उसको याद ज़बानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार,
नकली युद्ध-व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना ये थे उसके प्रिय खिलवाड़।
महाराष्ट्र-कुल-देवी उसकी भी आराध्य भवानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

-सुभद्रा कुमारी चौहान

1757 से 1858 के बीच के अन्य जन-आंदोलन

1857 की महान् क्रांति के पूर्व भी कुछ आंदोलन हुए जो स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में स्वर्णिम शब्दों में उल्लेखनीय हैं। 1776-77 में बंगाल का **फकीर विद्रोह** एक प्रमुख विद्रोह था जिसके नेता **मंजनूमशाह** थे। बंगाल में ही 1770-80 के बीच **संन्यासी विद्रोह** हुआ जिसका उल्लेख बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय के कालजयी उपन्यास आनन्द मठ में है। 1813 में **पागलपंथी** आंदोलन चला जिसके नेता **टीपू** थे। 1820-70 के बीच देश के अलग-अलग भागों में **वहाबी आंदोलन** चला। भारत में इस आंदोलन को लोकप्रियता दिलाने का श्रेय **सैय्यद अहमद रायबरेलवी** को जाता है। पंजाब में **कूका आंदोलन** की शुरूआत **भगत जवाहरमल** ने की। कूका आंदोलन के एक नेता राम सिंह कूका को अंग्रेजों ने रंगून निवार्सित कर दिया था।

महाराष्ट्र में **रामोसी विद्रोह (1825-26), सतारा विद्रोह (1840-41), सतवादी विद्रोह (1839-45)** तथा **गडकरी विद्रोह (1844)** हुए। त्रावणकोर (केरल) में **वेलुथंपी विद्रोह (1808-09)** हुआ। किट्टूर (कर्नाटक) में **चेन्नम्मा विद्रोह (1824-29)** हुआ। इसी प्रकार **कट्टाबोमन (1792-99), पइका (1817-18), गंजाम (1835), बुन्द (1846-47), बुंदेला (1846-47), पालीगर (तमिलनाडु), कछ (1816-19), संबलपुर (1827-40), राजू (1827-33), पालकोंडा (1831-32)** आदि विद्रोह हुए जो मुख्य रूप से अपदस्थ राजाओं द्वारा नेतृत्व प्रदान किये गये।

1857 के पूर्व के आदिवासी विद्रोहों में **चुआड़ विद्रोह (1768 तथा 1832), पहाड़िया विद्रोह (1778), भील विद्रोह (1818-48), हो विद्रोह (1820-32), सिंहपो विद्रोह (1830-39), कोया विद्रोह (1840-51), खोंड विद्रोह (1837-1856), कोल विद्रोह (1832-37), संथाल विद्रोह (1855-56), खासी विद्रोह (1833), अहोम विद्रोह (1828)** आदि प्रमुख विद्रोह थे। आदिवासी विद्रोहों का कारण भी मुख्य तौर पर अंग्रेजी शासन पद्धति के कारण आदिवासी समाज में आए परिवर्तन तथा आर्थिक विपन्नता ही थे।

1857 के पूर्व के प्रमुख किसान आंदोलनों में बंगाल का **रंगपुर विद्रोह (1783)** तथा केरल का **मोपला विद्रोह (1836-54)** शामिल थे। दोनों आंदोलनों के कारण अनुचित भूमि राजस्व की उगाही थे।

संन्यासी विद्रोह की एक प्रतीकात्मक तस्वीर

"तेरी जानिब उठी जो कहर की नज़र
उस नज़र को झुका के ही दम लेंगे हम
तेरी धरती पे है जो कदम ग़ैर का
उस कदम का निशाँ तक मिटा देंगे हम"

19वीं शताब्दी में सांस्कृतिक एवं सामाजिक जागरण

सांस्कृतिक तथा सामाजिक जागरण के बिना स्वतंत्रता आंदोलन सफल नहीं हो सकता क्योंकि विदेशी शासकों से मुकाबले के लिए अपने देश तथा अपनी संस्कृति के प्रति गौरव का भाव होना बहुत आवश्यक होता है। हमारे देश में 19वीं शताब्दी के सांस्कृतिक तथा सामाजिक जागरण से संबंधित आंदोलनों ने यही कार्य किया।

उपर्युक्त संदर्भ में हमारे देश में पहला सांस्कृतिक आंदोलन आरंभ करने का श्रेय **राजा राममोहन राय** को जाता है। उन्होंने 1828 में ब्रह्म समाज की स्थापना की। ब्रह्म समाज के कार्यों को **देवेन्द्र नाथ टैगोर, केशव चन्द्र सेन** आदि विद्वानों ने आगे बढ़ाया। **केशव चन्द्र सेन** की महाराष्ट्र यात्रा से प्रभावित होकर **महादेव गोविन्द रानडे** और **आत्माराम पाण्डुरंग** ने मुंबई में प्रार्थना समाज की स्थापना की जिसने इस क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया। केशव चन्द्र सेन की मद्रास यात्रा से प्रभावित होकर **के. श्रीधरलू नायडू** ने मद्रास में वेद समाज की स्थापना की जिसने ब्रह्म समाज के सांस्कृतिक जागरण के संदेश को दक्षिण भारत में फैलाया।

सांस्कृतिक जागरण का संदेश फैलाने में **स्वामी दयानन्द सरस्वती** की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही। उन्होंने 1875 में मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। आर्य समाज ने शिक्षा के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य किया।

हेनरी विनियन डेरेजियो ने कोलकाता में यंग बंगाल आंदोलन आरंभ किया। उन्हें आधुनिक भारत का प्रथम राष्ट्रवादी कवि कहा जाता है। **स्वामी विवेकानन्द** ने 1897 में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। स्वामी जी रामकृष्ण परमहंस के शिष्य थे। सुभाष चन्द्र बोस ने उन्हें **"आधुनिक राष्ट्रीय आंदोलन का आध्यात्मिक पिता"** कहा है।

सांस्कृतिक पुनर्जागरण की गाथा में **थियोसॉफिकल सोसाइटी** का नाम भी स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज है जिसकी स्थापना 1875 ई. में न्यूयॉर्क में की गई थी परन्तु भारत में इसे प्रसिद्धि दिलाने का श्रेय **एनी बेसेन्ट** को जाता है। उन्होंने 1898 में सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज की स्थापना की जो 1916 में मदन मोहन मालवीय जी के प्रयासों से "बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय" बना।

सांस्कृतिक एवं सामाजिक पुनर्जागरण के क्षेत्र में **धर्मसभा, देव समाज, हिन्दू समाज सुधार संघ, सेवा सदन, भारतीय सेवक समाज, भारतीय सामाजिक सम्मेलन, मानव धर्म सभा, रहनुमाये मज्दयासन् सभा** आदि संस्थाओं की भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही।

अलीगढ़ आंदोलन, देवबंद आंदोलन, अहमदिया आंदोलन आदि उल्लेखनीय इस्लामिक सुधार आंदोलन थे।

राजा राममोहन राय

स्वामी दयानन्द सरस्वती

स्वामी विवेकानन्द

केशव चन्द्र सेन

स्वदेशी आंदोलन, 1905

1857 की क्रांति के कुछ दशक पूर्व से ही सांस्कृतिक तथा सामाजिक संस्थाओं के अतिरिक्त आधुनिक प्रकृति के राजनैतिक संस्थाओं का उदय भी हमारे देश में होने लगा था। बंगभाषा प्रकाशिका सभा (1836), जमींदारी संघ (1836), ब्रिटिश इंडिया सोसाइटी (1843), ब्रिटिश इंडिया एसोसिएशन (1851), इण्डियन नेशनल एसोसिएशन (1876), ईस्ट इंडिया एसोसिएशन (1867), बॉम्बे नेटिव एसोसिएशन (1852), पुणे सार्वजनिक सभा (1870), बॉम्बे एसोसिएशन (1885), मद्रास नेटिव एसोसिएशन (1849), मद्रास महाजन सभा (1884) आदि कुछ प्रमुख आरंभिक राजनैतिक संगठन थे। इन आरंभिक राजनैतिक संगठनों तथा इनसे प्रेरणा लेकर बाद में बने राष्ट्रीय स्तर के बड़े राजनैतिक संगठनों से देश में राजनैतिक चेतना का विकास हुआ।

दिसम्बर 1903 में अंग्रेजी सरकार ने बंगाल विभाजन का निर्णय सार्वजनिक किया। इसके माध्यम से बंगाल में बंगालियों को ही अल्पसंख्यक बना दिया गया। प्रस्तावित नये बंगाल में 17 मिलियन बंगाली आबादी रहनी थी तथा 37 मिलियन हिन्दी एवं ओडिया आबादी। इसके माध्यम से बंगाल में उपजी राष्ट्रीयता की भावना, राजनैतिक चेतना एवं जागरूकता को कमजोर करना, शासकीय लक्ष्य था। इसके अतिरिक्त धार्मिक कार्ड भी खेला गया ताकि फूट डालो और राज करो की नीति को आगे बढ़ाया जाए। जहाँ एक ओर प्रस्तावित पश्चिम बंगाल हिन्दू बहुल होने वाला था, वहीं पूर्वी बंगाल इस्लाम बहुल।

ब्रिटिश सरकार के इस निर्णय के विरोध में 1905 में **"स्वदेशी आंदोलन"** आरंभ हो गया। विदेशी कपड़े तथा विदेशी नमक का बहिष्कार होने लगा। विदेशी वस्त्रों को जलाया गया। इस आंदोलन में बंगाल में **अश्विनी कुमार दत्त** की उल्लेखनीय भूमिका रही जो एक साधारण स्कूल शिक्षक थे। **लोकमान्य तिलक** ने स्वदेशी और बहिष्कार का संदेश देने के लिए महाराष्ट्र में छत्रपति शिवाजी महाराज और गणपति उत्सवों की शुरूआत की। स्वदेशी एवं बहिष्कार के लिए "वंदे मातरम्" सर्वप्रमुख नारा बन गया। **रवीन्द्रनाथ ठाकुर** ने आंदोलन के दौरान आमार सोनार "बांग्ला" लिखा जो आज बांग्लादेश का राष्ट्रीय गीत

है। पंजाब में आंदोलन का नेतृत्व **अजीत सिंह** एवं **लाला लाजपत राय** ने किया। दिल्ली में **सैयद हैदर रजा** तथा मद्रास में **चिदम्बरम् पिल्लै** की प्रमुख भूमिका रही।

स्वदेशी आंदोलन का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर गहरा असर पड़ा। इस आंदोलन में प्रयुक्त स्वदेशी, असहयोग एवं बहिष्कार के सिद्धान्त का प्रयोग स्वतंत्रता संग्राम में अंत तक किया जाता रहा। इस आंदोलन में भाग लेने के लिए पहली बार महिलाएं घर की दहलीजों से बाहर निकलीं तथा बाद में भी यह प्रवृत्ति जारी रही। इस प्रकार यह आंदोलन अनेक दृष्टियों से अत्यंत महत्वपूर्ण एवं दीर्घकालिक प्रभाव वाला सिद्ध हुआ।

स्वदेशी आंदोलन के दौरान जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से प्रयुक्त एक पोस्टर

होम रूल आंदोलन, 1916

ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध अपनी गतिविधियों के कारण, आठ वर्ष के कारावास से बाहर आने (1914 में) के बाद भी, **बाल गंगाधर तिलक** ने बिना अपना उत्साह खोए, **एनी बेसेन्ट** के साथ मिलकर होम रूल (स्वशासन) आंदोलन आरंभ कर दिया। 1916 में उन्होंने आंदोलन के प्रसार के लिए देश के बड़े भूभाग का दौरा किया तथा स्पष्ट शब्दों में कहा कि - **"स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है तथा मैं इसे लेकर रहूंगा।"**

स्वराज के विचार को फैलाने के लिए तिलक जी ने दो समाचार पत्रों की शुरुआत की - **मराठा (अंग्रेजी में)** तथा **केसरी (मराठी में)**। अपने इन पत्रों के माध्यम से तिलक जी ने पूरे देश को राष्ट्रीयता का संदेश दिया।

तिलक जी ने पहली बार स्वराज की अवधारणा को क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा के साथ जोड़ा। वे भाषा के आधार पर राज्यों के वर्गीकरण की माँग करने वाले प्रथम बड़े नेता थे। चिरोल वेलेंटाइन ने अपनी पुस्तक "इण्डियन अनरेस्ट" में उन्हें **"भारतीय असंतोष का जनक"** कहा है। यहां यह उल्लेखनीय है कि तिलक जी अपने समय के सबसे बड़े नेता थे। स्वतंत्रतापूर्व भारतीय राजनीति को "नरम" स्थिति से "गरम" स्थिति में लाने का श्रेय प्रमुख रूप से तिलक जी को ही है। होम रूल आंदोलन की सफलता के श्रेय भी तिलक जी को ही जाता है। आंदोलन के दौरान तिलक जी की एक झलक पाने के लिए लाखों लोग घंटों इंतजार किया करते थे। तिलक जी ने इस आंदोलन के माध्यम से राष्ट्रवाद के सही अर्थ का अभूतपूर्व प्रचार-प्रसार किया।

आंदोलन के प्रसार हेतु **एनी बेसेंट** ने देश के उन भागों का दौरा किया जहाँ तिलक जी नहीं जा सके। आंदोलन के प्रसार हेतु बेसेंट ने "कॉमनवील" नामक साप्ताहिक अखबार निकाला।

क्रांतिकारी आंदोलन का पहला चरण (1905-1915)

स्वतंत्रता आंदोलन के आरंभ में अंग्रेजी सरकार को आवेदन या माँग पत्र सौंपने की नीति अपनाई गयी जिससे असंतुष्ट होकर देश में क्रांतिकारी आंदोलन के प्रथम चरण का जन्म हुआ। क्रांतिकारियों द्वारा **तिलक जी** द्वारा दिये गये नारे, **'अनुनय विनय नहीं बल्कि युयुत्सा'** को अपना आदर्श बनाया गया। क्रांतिकारी आंदोलन का मुख्य केन्द्र महाराष्ट्र, बंगाल तथा पंजाब रहे। साथ ही विदेशों में रहकर भी क्रांतिकारियों ने देश को स्वतंत्रता दिलाने का प्रयास किया।

महाराष्ट्र में **चाफेकर बंधुओं** को पहली क्रांतिकारी घटना को अंजाम देने (1897) का श्रेय जाता है जो हिन्दू धर्म संघ नामक संस्था से जुड़े थे। **विनायक दामोदर सावरकर** ने 1904 में "अभिनव भारत समाज" की स्थापना की थी। **अनन्त लक्ष्मण करकरे** इसी संस्था के 17 वर्षीय महान् क्रांन्तिकारी थे।

क्रान्तिकारी आंदोलन का सबसे बड़ा केन्द्र बंगाल था। अनुशीलन समिति पहला क्रान्तिकारी संगठन (स्थापना 1902) था। इस समिति के अतिरिक्त भी बंगाल में कई सक्रिय समितियाँ थीं। बंगाल की पहली पीढ़ी के क्रांतिकारियों में **हेमचंद्र कानूनगो** का नाम महत्वपूर्ण रूप से आता है जिन्होंने माणिकतल्ला में बम बनाने हेतु कारखाना खोला था। **खुदीराम बोस** 19 वर्ष के थे जब उन्हें फाँसी दे दी गई। **बारीन्द्र घोष, अरविंद घोष, जतीन्द्र नाथ मुखर्जी (बाघा जतिन), रास बिहारी बोस** आदि बंगाल के सर्वप्रमुख क्रांतिकारी नेता हुए।

पंजाब के क्रान्तिकारी आंदोलन को जन्म देने का श्रेय **अजीत सिंह, सूफी अंबा प्रसाद, लाला लाजपत राय** आदि को जाता है।

भारत से बाहर रहकर भारत की आजादी के लिए संघर्ष करने वाले क्रान्तिकारी संगठनों में इण्डिया होमरूल सोसाइटी (स्थापना 1905) का प्रमुख स्थान है। इसे लंदन में **श्यामजी कृष्ण वर्मा** ने संगठित किया था। वे ऑक्सफोर्ड में संस्कृत के प्रोफेसर थे। सोसाइटी के प्रमुख सदस्यों में **वी.डी. सावरकर**, **लाला हरदयाल** तथा **मदनलाल धींगरा** का नाम

शामिल है। **भीखाजी कामा** भी श्यामजी कृष्ण वर्मा की सहयोगी थी जिन्होंने स्टुटगार्ड सम्मेलन में पहली बार हरा, पीला और लाल रंग का राष्ट्रीय ध्वज फहराया था।

विदेश से भारत की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने वाले क्रान्तिकारी संगठनों में गदर पार्टी का नाम भी प्रमुख रूप से आता है जो अमेरिका में संगठित था। **लाला हरदयाल** इसके पर्थ-प्रदर्शक मनीषी थे जो स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में संस्कृत के प्रोफेसर रह चुके थे। **भाई परमानंद** एवं **रामचन्द्र**, इस संगठन के अन्य प्रमुख क्रांतिकारी थे।

राजा महेन्द्र प्रताप एक अन्य क्रांतिकारी थे जिन्होंने 1915 में काबुल में भारत की अंतरिम सरकार का गठन किया था तथा अपनी सरकार के समर्थन हेतु लेनिन से भी मिले थे।

उपर्युक्त के अतिरिक्त भी 1905 से 1915 के बीच अंग्रेजी शासन के विरुद्ध कई छोटे-छोटे क्रांतिकारी आंदोलन हुए परन्तु दुर्भाग्य से इन्हें भी अंग्रेजों द्वारा नृशंसता के साथ दबा दिया गया।

रास बिहारी बोस

चाफेकर बंधु

चंपारण सत्याग्रह (1917), खेड़ा सत्याग्रह (1918), अहमदाबाद मिल मजदूरों का आंदोलन (1918), रौलेट सत्याग्रह (1919) तथा जलियांवाला बाग हत्याकांड (1919)

चंपारण सत्याग्रह एक किसान आंदोलन था। राजकुमार शुक्ला के बुलावे पर गांधी जी इस आंदोलन हेतु बिहार गए। आंदोलन के फलस्वरूप "तीन कठिया" व्यवस्था का अंत किया गया तथा लगान को भी घटाया गया एवं किसानों को क्षतिपूर्ति राशि भी प्राप्त हुई।

खेड़ा सत्याग्रह में गांधी जी के साथ वल्लभभाई पटेल शामिल हुए। यह भी किसान आंदोलन ही था। आंदोलन के परिणामस्वरूप किसानों को लगान में कुछ छूटें प्राप्त हुईं।

अहमदाबाद मिल मजदूरों का आंदोलन, बोनस के भुगतान पर केन्द्रित था। जहाँ मजदूर 35% बोनस की माँग कर रहे थे वहीं मिल मालिक 20% बोनस देना चाह रहे थे। गांधी जी के हस्तक्षेप के बाद पूरे मामले को ट्रिब्यूनल को सौंपा गया जिसने 35% बोनस देने का फैसला दिया।

1919 के रौलेट अधिनियम के अनुसार अंग्रेजी सरकार जिसको चाहे, जब तक चाहे तथा बिना मुकदमा चलाये, किसी को भी जेल में बंद कर सकती थी। इन कानून को "बिना वकील, बिना अपील, बिना दलील" का कानून कहा गया। **रौलेट सत्याग्रह** के अंतर्गत 6 अप्रैल 1919 को गांधी जी के अनुरोध पर देश भर में हड़तालों का आयोजन किया गया।

पंजाब में आंदोलन का नेतृत्व **डॉ. किचलू** तथा **डॉ. सत्यपाल** ने किया। अंग्रेजी सरकार द्वारा उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इसके विरोध हेतु 10 अप्रैल, 1919 को निकाले गये एक शांतिपूर्ण जुलूस पर पुलिस ने गोली चलाकर कुछ निहत्थे आंदोलनकारियों को मार डाला। 13 अप्रैल, 1919 को अमृतसर के **जलियाँवाला बाग** में पूर्वोक्त गोलीकाण्ड तथा डॉ. किचलू एवं डॉ. सत्यपाल की गिरफ्तारी के विरुद्ध एक शांतिपूर्ण सभा का आयोजन किया गया। अंग्रेज जनरल ओ. डायर ने बिना किसी पूर्व सूचना या चेतावनी के आंदोलनकारियों पर गोली चलवा दी जिसमें लगभग 1000 आंदोलनकारी शहीद हो गये। 10 मिनट तक लगातार निहत्थे लोगों पर गोलाबारी होती रही जिसमें औरतें और बच्चे भी शामिल थे।

जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड ने स्वतंत्रता आंदोलन की दिशा ही बदल दी। अंग्रेजी राज के "सभ्य" होने का बाहरी आवरण उतर गया। **रवीन्द्रनाथ टैगोर** ने "नाइट" की उपाधि वापस लौटा दी। **शंकर नायर** ने वायसराय की कार्यकारिणी सभा से त्याग पत्र दे दिया। इस घटना के बाद से पढ़े-लिखे लोग भी स्वतंत्रता के युद्ध में हृदय से जुड़ गए। हत्याकांड का बदला लेते हुए **सरदार उधम सिंह** ने लंदन जाकर डायर को गोली मार दी।

खिलाफत आंदोलन, 1919

वैश्विक घटनाक्रमों के परिणामस्वरूप भारत में खिलाफत आंदोलन का आरंभ हुआ था, परन्तु आंदोलन ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों की "**फूट डालो, राज करो**" नीति को जबरदस्त तरीके से चोट पहुँचाया। आंदोलन का मुख्य लक्ष्य, तुर्की को अपना समर्थन देना था जिसे प्रथम विश्व युद्ध के बाद विजेता ब्रिटिश सरकार द्वारा विघटित किया जा रहा था। **मोहम्मद अली** तथा **शौकत अली (अली बंधु)** इस आंदोलन के सर्वप्रमुख नेता थे। आंदोलन में गांधी जी भी शामिल हुए। तुर्की में मुस्तफा कमाल पाशा के सुधार लाने के बाद खिलाफत आंदोलन की प्रांसगिकता समाप्त हो गई।

असहयोग आंदोलन, 1920

असहयोग आंदोलन को बड़े पैमाने का पहला जन-आंदोलन कहा जाता है। आंदोलन की पृष्ठभूमि में, जालियांवाला बाग का नृशंस हत्याकांड, तुर्की के खलीफा के साथ गलत व्यवहार आदि शामिल थे। आंदोलन का लक्ष्य स्वराज की स्थापना था।

"असहयोग" का अर्थ था अंग्रेज सरकार तथा उनकी संस्थाओं से सहयोग न करना। आंदोलन के अंतर्गत सी.आर. दास, सरदार पटेल, राजेन्द्र प्रसाद आदि कई नेताओं ने वकालत छोड़ दी तथा स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हो गये। सुभाष चन्द्र बोस ने सिविल सेवा से त्याग पत्र दे दिया। विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया गया। स्वदेशी कताई-बुनाई को प्रोत्साहित किया गया। छात्रों ने अंग्रेजी स्कूल, कॉलेज आदि जाना छोड़ दिया तथा उनकी शिक्षा के लिए देशभर में 800 से अधिक "राष्ट्रीय स्कूल-कॉलेज" खोले गये। सुभाष चन्द्र बोस, "नेशनल कॉलेज ऑफ कलकत्ता" के प्रधानाचार्य बनाये गये। शराब की दूकानों पर धरना दिया गया जिससे सरकार को बड़ी मात्रा में राजस्व की हानि हुई।

इस बीच 17 नवम्बर 1921 को प्रिंस ऑफ वेल्स का भारत दौरा था। उस दिन पूरे देश में हड़ताल का आयोजन किया गया। वेल्स से मुम्बई पहुँचने पर मुम्बई की सड़कें वीरान एवं उजड़ी हुई नजर आईं । आंदोलन को रोकने के लिए अंग्रेजी सरकार ने अनेक बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिया।

आंदोलन अपने चरम पर था जब **चौरी-चौरा कांड** हो गया। कांड में अधीर जनता ने 22 जवानों को पुलिस थाने के अंदर ही जला दिया। इस घटना से आहत होकर गांधी जी ने 12 फरवरी 1922 को आंदोलन वापस ले लिया। कई बड़े नेताओं ने इसके लिए गांधी जी की आलोचना की तथा बाद में असंतुष्ट नेताओं ने स्वराज दल की स्थापना (1923 में) की। 18 मार्च, 1922 को गांधी जी को गिरफ्तार कर लिया गया तथा ब्रिटिश सरकार के खिलाफ राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया एवं उन्हें 06 वर्षों की सजा दी गई, परन्तु खराब स्वास्थ्य कारणों से उन्हें 5 फरवरी 1924 को जेल से रिहा कर दिया गया।

क्रांतिकारी आंदोलन का द्वितीय चरण (1924-34)

असहयोग आंदोलन को असमय वापस लेने तथा बड़े नेताओं के जेल में होने से पैदा हुए राजनैतिक गतिविधियों के अभाव की पृष्ठभूमि में क्रांतिकारी आंदोलन का द्वितीय चरण आरंभ हुआ।

इस दौर में उत्तर भारत में **शचीन्द्रनाथ सान्याल, राम प्रसाद बिस्मिल** तथा **चन्द्रशेखर आजाद** महत्वपूर्ण क्रांतिकारी थे जिन्होंने हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन की स्थापना की थी। इस संठगन ने **काकोरी कांड** को अंजाम दिया था।

कालांतर में चन्द्रशेखर आजाद ने 1928 में हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (एच.एस.आर.ए) का गठन किया। साइमन कमीशन के विरोध कर रहे **लाला लाजपत राय** पर सांडर्स ने, लाठियों से प्रहार करवा दिया जिससे उनकी मृत्यु हो गई। एच.एस.आर.ए के **चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह** तथा **राजगुरु** ने सांडर्स की हत्या की। एच.एस.आर.ए के **भगत सिंह** तथा **बटुकेश्वर दत्त** ने 1929 में अंग्रेजों के केन्द्रीय विधान-मण्डल पर बम फेंका जिसका उद्देश्य मात्र अंग्रेजों को डराना था। उन दोनों के अतिरिक्त एस.एस.आर.ए के अनेक क्रांतिकारियों को गिरफ्तार किया गया तथा "**लाहौर षड्यंत्र केस**" के अंतर्गत उन पर मुकदमा चलाया गया। जेल में बंद क्रांतिकारियों ने राजनैतिक कैदी का दर्जा प्राप्त करने के लिए भूख हड़ताल की। भूख हड़ताल पर बैठे **जतिन दास** की 64 दिनों बाद मृत्यु हो गई। जतिन दास के मृत शरीर को देखने के लिए कलकत्ता रेलवे स्टेशन पर 6 लाख लोगों की भारी भीड़ उपस्थित हो गई तथा इस महान् युवा क्रांतिकारी नेता को अश्रुपूरित नयनों से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। 23 मार्च 1931 को **भगत सिंह, सुखदेव** और **राजगुरू** को भी फांसी दे दी गई जिससे पूरे राष्ट्र का मन बैठ गया। 27 फरवरी 1931 को इलाहबाद के अल्फ्रेड पार्क में पुलिस मुठभेड़ में **चन्द्रशेखर आज़ाद** शहीद हो गए।

क्रांतिकारी आंदोलन के द्वितीय चरण में भी बंगाल की सक्रिय भूमिका रही। अनुशीलन समिति तथा युगांतर जैसे क्रांतिकारी संगठन फिर से सक्रिय हो गए। बंगाल में **सूर्यसेन** इस युग के सबसे बड़े क्रांतिकारी थे। प्यार से लोग उन्हें "मास्टर दा" कहकर सम्बोधित करते

थे क्योंकि मूल रूप से वे शिक्षक थे। उन्होंने इण्डियन रिपब्लिक आर्मी का गठन किया था। आई.आर.ए की क्रांतिकारी गतिविधियों में महिलाओं ने भी सक्रियतापूर्वक भाग लिया था। 12 जनवरी 1934 को सूर्यसेन को भी फांसी दे दी गई।

शहीद-ए-आजम भगत सिंह के सम्मान में जारी डाक टिकट

"जब शहीदों की अर्थी उठे धूम से
देश वालों तुम आंसू बहाना नहीं
पर मनाओ जब आज़ाद भारत का दिन
उस घड़ी तुम हमें भूल जाना नहीं
लौट कर आ सके न जहां में तो क्या
याद बन के दिलों में तो आ जायेंगे"

सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-34)

असहयोग आंदोलन (1920) में सरकार की संस्थाओं से सहयोग न करने के लिए कहा गया था। सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-34) में इससे आगे बढ़कर सरकार के अनुचित कानून को तोड़ने की बात कही गई। जहाँ पहले "स्वराज" की माँग की जाती थी वहीं अब "पूर्ण स्वराज" की मांग उठी। 12 मार्च, 1930 को गांधी जी साबरमती आश्रम से अपने 78 अनुनायियों के साथ निकलकर, 5 अप्रैल 1930 को दांडी पहुँचे तथा उन्होंने नमक कानून तोड़ दिया। इसी प्रकार तमिलनाडु में **सी. राजगोपालाचारी** ने नमक यात्रा की। मालाबार में वायकोम सत्याग्रह के नेता **के. केलप्पड़** ने नमक यात्रा की। ओडिशा में **गोपचन्द्र बन्धु चौधरी** के नेतृत्व में बालासोर, कटक तथा पुरी में नमक आंदोलन चलाया गया। असम के सिलहट तथा बंगाल के नोवाखाली में भी नमक कानून को तोड़ने का प्रयास किया गया।

पश्चिमोत्तर प्रांत में **खान अब्दुल गफ्फार खां** (सीमांत गांधी) के नेतृत्व में सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाया गया। पेशावर में आंदोलन ने उग्र स्वरूप धारण कर लिया। आंदोलन को दबाने के लिए गढ़वाल रेजीमेंट की कुछ सैन्य टुकड़ियों को पेशावर भेजा गया। **चन्द्रसिंह गढ़वाली** के नेतृत्व में गढ़वाल रेजीमेंट के सिपाहियों ने निहत्थे आंदोलनकारियों पर गोली चलाने से इंकार कर दिया जो संभवत: अवज्ञा का चरम था। 25 अप्रैल 1930 से 4 मई 1930 तक, पेशावर पर जनता का शासन रहा। पेशावर पर पुन: कब्जा करने के लिए ब्रिटिश सरकार को हवाई हमले का सहारा लेना पड़ा।

उत्तर पूर्व में विशेष रूप से मणिपुर में भी लोगों की उल्लेखनीय भागीदारी रही। 13 वर्षीय नागा महिला गाडिनेल्यू ने अपने नागा साथियों के साथ सविनय अवज्ञा आंदोलन को अपना पूरा-पूरा समर्थन दिया। अब सम्मान के साथ उन्हें **"रानी गाडिनेल्यू"** कहा जाता है।

सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान ब्रिटिश सरकार के दमन के अनेक पीड़ादायक किस्से हैं। परन्तु धरासणा (गुजरात) के नमक कारखाने के समक्ष घटी घटना, अमेरिका के न्यू फ्रीमैन अखबार के संवाददाता **बेब मिलर** के माध्यम से पूरे विश्व में पहुँच गई। वहाँ **सरोजनी नायडू, इमाम साहब** तथा **मणिलाल** के नेतृत्व में 25 हजार स्वयं सेवकों को लोहे की मूँठ

वाली लाठियों से पीटा गया। वेब मिलर ने लिखा -**"संवाददाता के रूप में मैंने पिछले 18 वर्षों में असंख्य नागरिक विद्रोह देखे हैं। दंगे, गली कूचों में मारकाट एवं विद्रोह भी देखे हैं। परन्तु धरासणा जैसा भयानक दृश्य मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखा"**

आंदोलन, अनेक स्थानों पर विविध रूपों में आगे बढ़ा। कहीं चौकीदारी कर देना बंद कर दिया गया तो कहीं अनुचित वन नियमों के विरुद्ध "वन सत्याग्रह" चलाया गया। कहीं छात्रों ने विरोध किया तो कहीं बच्चों की "वानर सेना" तथा लड़कियों की 'माजेरी सेना" के समाचार आये।

संभवत: यह आंदोलन की भारी सफलता ही थी कि गांधी जी को द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए ब्रिटिश सरकार द्वारा लंदन बुलाया गया। 1931 में गांधी-इरविन समझौता हुआ। परन्तु उक्त सम्मेलन में आजादी पर बात करने के स्थान पर अन्य गौण मुद्दों को तरजीह दी गई तथा वे निराश होकर भारत लौट आये एवं सविनय अवज्ञा आंदोलन का दूसरा दौर (1932-34) आरंभ हुआ।

गांधी जी एवं अन्य सभी चोटी के नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। आंदोलन का दमन पूरी शक्ति से किया गया। सभी प्रकार के तरीकों का उपयोग किया गया। द्वितीय सविनय अवज्ञा आंदोलन में लगभग 10,000 आंदोलनकारियों को जेल भेज दिया गया जिसमें महिलाएं भी शामिल थीं। सरकार आंदोलन के दमन में तो सफल रही परन्तु आंदोलन से स्पष्ट हो गया था कि जनता अब पूरी तौर राजनैतिक दृष्टि से जागरूक हो चुकी है तथा अब दिल्ली दूर नहीं है।

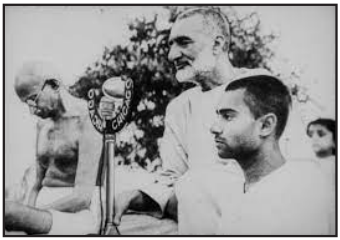

खान अब्दुल गफ्फार खां एवं गांधी जी

भारत छोड़ो आंदोलन, 1942

3 सितम्बर, 1939 को द्वितीय विश्व युद्ध आरंभ हुआ। इसके बाद वैश्विक तथा राष्ट्रीय स्तर पर घटनाक्रमों में तेजी से बदलाव आये। 1942 तक महायुद्ध में मित्र राष्ट्रों के समूह की स्थिति कमजोर होने लगी जिसमें ब्रिटेन भी शामिल था। अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट, ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री ईवार आदि ने ब्रिटिश प्रधानमंत्री चर्चिल पर दबाव डाला कि वे युद्ध हेतु भारतीयों का सहयोग प्राप्त करने के लिए भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के नेताओं से बात करें। उधर जापानी सेना ने रंगून (बर्मा) पर नियंत्रण स्थापित कर लिया। इसके तीन दिन बाद घबराए हुए चर्चिल ने क्रिप्स को भारत भेजा ताकि राजनैतिक गतिरोध को दूर किया जा सके तथा युद्ध में भारत का सहयोग प्राप्त किया जा सके। क्रिप्स ने जो प्रस्ताव दिये उसमें युद्ध के बाद भारत को "डोमेनियन स्टेटस" देने की बात कही गई परन्तु फिलहाल के लिए स्थिति को यथावत् बनाये रखने की स्थिति बनी जो भारतीय नेताओं को स्वीकार नहीं थी। गांधी जी ने इसे **"ऐसे बैंक का बाद की तारीख वाला चेक कहा, जो डूब रहा है।"**

क्रिप्स मिशन की विफलता की पृष्ठभूमि में भारत छोड़ो आंदोलन आरंभ हुआ। गांधी जी ने कहा कि "सम्पूर्ण आज़ादी से कम कुछ भी हमें स्वीकार नहीं है" तथा इस आंदोलन का मंत्र है - **"करो या मरो"**।

9 अगस्त, 1942 को आंदोलन आरंभ होते ही चोटी के सभी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। यह देश का प्रथम आंदोलन था जो नेतृत्वविहीन होकर भी अपने उद्देश्यों को पूरा कर सका। आंदोलन के अंतर्गत क्रान्तिकारी गतिविधियां भी जारी रहीं। आंदोलन युवा हाथों में चला गया। जय प्रकाश नारायण जेल से भाग गये तथा "आजाद दस्ता" का गठन किया। अहमदाबाद, मद्रास, बंगलौर, सहारनपुर आदि स्थानों पर मजदूर हड़तालें हुईं । जय प्रकाश नारायण के अतिरिक्त राम मनोहर लोहिया, अच्युत पटवर्धन, अरूणा आसफ अली आदि ने भूमिगत रहकर आंदोलन को गति दी। आंदोलन का सबसे ज्यादा असर बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, मद्रास तथा बम्बई पर पड़ा परन्तु इसमें सभी राज्यों की सहभागिता रही। **"करो या मरो"** का नारा देश भर में गूँज उठा।

आंदोलन के दौरान अनेक स्थानों पर कुछ समय के लिए ब्रिटिश सत्ता समाप्त हो गई तथा समानांतर सरकारों का गठन हुआ। बलिया में **चित्तू पांडे** के नेतृत्व में पहली समानांतर सरकार स्थापित हुई।

बंगाल के तामलुक में भी जातीय सरकार की स्थापना हुई जो 1944 तक चली। सतारा में **वाई.पी. चव्हाण** एवं **नाना पाटिल** ने समानांतर सरकारों का गठन किया। यह सरकार 1945 तक चली।

आंदोलन को बर्बरतापूर्वक दबा दिया गया। 15 अगस्त 1942 को सरकार ने आंदोलनकारियों पर हवाई जहाज से मशीनगन के उपयोग को अनुमति दी। परन्तु आंदोलनकारी **"करो या मरो"** के ध्येय पर अडिग रहे। धीरे-धीरे आंदोलन दब तो गया परन्तु अंग्रेजी राज को यह समझ में आ गया कि भारत के युवा अब उन्हें अधिक दिनों तक इस पवित्र भूमि पर टिकने नही देंगे।

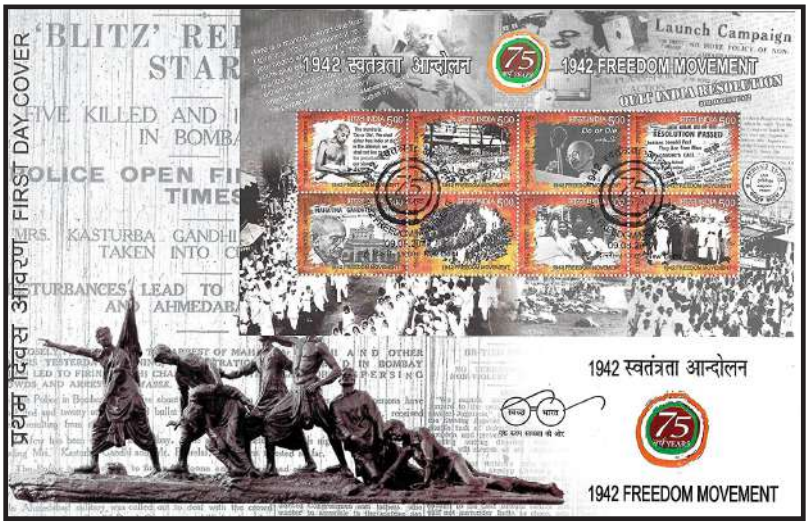

भारत छोड़ो आंदोलन के 75 वर्ष पूरे होने पर 2017 में जारी स्टाम्प शीट

आजाद हिंद फौज के सिपाहियों के समर्थन में आंदोलन, 1945

भारत के महान् क्रांतिकारी नेता **रास बिहारी बोस** ने देश को आजाद कराने के विचार से जापान में इंडियन इंडिपेंडेंस लीग की स्थापना की थी और वे भारतीय राष्ट्रीय सेना के विषय में विचार कर रहे थे। इस बीच **मोहन सिंह** ने जापान के समक्ष आत्म समर्पण कर चुके ब्रिटिश भारतीय सैनिकों को एकत्रित किया तथा 15 दिसम्बर 1941 को आजाद हिंद फौज की स्थापना की।

जून 1942 में रास बिहारी बोस ने इंडियन इंडिपेंस लीग एवं आजाद हिन्द फौज की कमान **नेताजी सुभाष चन्द्र बोस** को सौंप दी। नेताजी के आई.एन.ए के सर्वोच्च कमांडर बनते ही भारतीय सैनिकों में एक नया जोश आ गया तथा वे हृदय से आई.एन.ए तथा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ गए। उन्हें पहली बार राष्ट्र के प्रति निष्ठा का सही अर्थ ज्ञात हुआ। बोस ने सैनिकों से आह्वान किया - **"आज हमें पागल पुजारी की आवश्यकता है जो अपना सिर काटकर स्वाधीनता की देवी को भेंट चढ़ा सके।"**

जापानी सेना ने आजाद हिन्द फौज को अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह सौंप दिए। 18 मार्च 1944 को आजाद हिंद फौज के तीन ब्रिगेडों ने भारत को आजाद कराने के उद्देश्य से म्यांमार की सीमाओं को पार कर, उत्तर पूर्व के नागालैण्ड और कोहिमा पर घेरा डाला। यह घेरा लगभग 1 वर्ष तक चला। परन्तु मई 1945 में ब्रिटिश सेना द्वारा म्यांमार पर पुन: अधिकार प्राप्त कर लेने के बाद, आजाद हिंद फौज के सिपाहियों को जापानी सेना के साथ आत्मसमर्पण करना पड़ा।

आजाद हिंद फौज के गिरफ्तार सैनिकों को दिल्ली लाया गया तथा ब्रिटिश सरकार के प्रति निष्ठा भंग करने के लिए, उन पर लाल किले में मुकदमा चलाने का निर्णय लिया गया। सरकार के इस निर्णय के विरोध में आंदोलन आरंभ हो गया।

आजाद हिन्द फौज के **कर्नल प्रेम सहगल, कर्नल गुरबख्श सिंह ढिल्लों** तथा **मेजर जनरल शाहनवाज खान** को फांसी की सजा सुनाई गई। इस निर्णय का इतना जबरदस्त

विरोध हुआ कि वायसराय को अपने विशेषाधिकार का प्रयोग करते हुए तीनों सैनिकों की फांसी की सजा को माफ करने के लिए विवश होना पड़ा। इस प्रकार यह आंदोलन अपने उद्देश्यों में **सफल** रहा।

आजाद हिन्द फौज की एक परेड में भाग लेते हुए नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

कर्नल गुरबख्श सिंह ढिल्लों

मेजर जनरल शाहनवाज खान

कर्नल प्रेम सहगल

शाही नौसेना विद्रोह, 1946

भारत छोड़ो आंदोलन एवं आजाद हिन्द फौज से संबंधित घटनाओं का ब्रिटिश सेना के भारतीय सिपाहियों पर भारी असर पड़ा। 18 फरवरी, 1946 को नस्लीय भेदभाव के कारण रॉयल इंडियन नेवी के भारतीय अधिकारियों एवं सिपाहियों ने विद्रोह कर दिया। नाविक **वी.सी. दत्त** ने नौसेना के एक जहाज (तलवार) की दीवारों पर **'अंग्रेजों भारत छोड़ो'** लिख दिया था जिसके कारण उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। यह भी विद्रोह का एक कारण बना। शीघ्र ही करांची, मद्रास तथा कलकत्ता भी विद्रोह की चपेट में आ गये। चार दिनों के भीतर विद्रोहियों ने 20 जहाजों पर अधिकार कर लिया। विद्रोह की चरम अवस्था में 78 जहाज, 20 तटीय प्रतिष्ठान तथा 20,000 नाविक इसमें शामिल थे। जबलपुर के सैनिकों ने भी विद्रोह में हिस्सा लिया। इस विद्रोह में पहली बार सेना के जवानों तथा आम आदमी का खून, एक साथ एवं एक लक्ष्य के लिए सड़कों पर बहा जो शायद आजादी की प्राप्ति के लिए अंतिम शर्त के रूप में शेष बच गया था तथा वह भी इस विद्रोह के माध्यम से पूरा हो गया था।

SECOND DAK EDITION

Hindusthan Standard

VOL. IX, NO. 142 — CALCUTTA:—SATURDAY, FEBRUARY 23, 1946. FALGOON 11, 1352 B. S. — PRICE TWO ANNAS

INDIAN SAILORS IN REVOLT

The Bombay R. I. N. Ratings who struck work are seen parading the streets with Congress flags.

SIX HOURS BATTLE WITH BRITISH TROOPS

GRAVE TURN IN R. I. N. MEN'S STRIKE IN BOMBAY

TWENTY SHIPS CAPTURED

Govt. Rushing Strong Naval And Air Reinforcements

"CEASE FIRE" ON BOTH SIDES AFTER CONCLUSION OF TRUCE

BOMBAY, FEB. 21.—A kind of regular warfare has been in progress inside the Castle Barracks between the Indian naval ratings and British soldiers. Repeated loud reports of gunfire were heard every few minutes from the area. It is not yet known what kind of guns were used which produce such loud reports.

British troops have replaced Indian troops which were mounting guard yesterday.

Some of the Indian ratings who are inside the Castle Barracks according to a high naval officer, are still armed with firearms and they are returning the fire of the British soldiers. One British major and two Indian sepoys are reported to have been injured as a result of firing by the Indian naval ratings. According to another officer, the Indian ratings are in possession of large quantity of ammunition which may last a few days.

They secured this ammunition as a result of their raid on the armoury this morning.

A New Delhi message states that strong naval, military and air reinforcements are on their way to Bombay, Poona and Karachi, it is announced by General Headquarters.

At about 5-30 p.m. it was reported that consequent on the visit of a "Peace Mission" consisting of Mr. Khan President of the Central Strike Committee, and one Congressman, to the Indian ratings intrenched in Castle Barracks, a "truce" was arrived at ...

THE BATTLE ENDS

Sit-Down Strike Continues

POLICE OPEN FIRE ON CROWDS

Trouble In Kalbadevi And Girguam Area

FIRING ON STRIKERS AT KARACHI

INDIANS RETALIATE WITH NAVAL GUNS

ONE KILLED AND 14 INJURED IN THE DUEL

ULTIMATUM FOR WITHDRAWAL OF MILITARY

KARACHI, FEB. 21.—Military police opened fire this morning on strikers of H. M. I. S. "Hindustan" which is lying on the east wharf. The Indian ratings retaliated with two naval guns. One was killed.

It is stated that the action took place when the British military police on a patrol vessel tried to prevent armed strikers from disembarking from the vessel "Hindustan". The injured whose number is said to have risen to 14 have been admitted into military hospital.

SARDAR SARDUL SINGH

India Govt. Orders Release

NEW DELHI, FEB. 21.—The Government of India have ordered the release of Sardar Sardul Singh Caveesher, who is in detention at Dharmsala.—A. P. I.

BAN ON FORWARD BLOC AND C. S. P.

WHY U. S. TROOPS IN INDIA

15 अगस्त, 1947 को देश की स्वतंत्रता

1945 में द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद पूरे विश्व में राजनैतिक समीकरण बड़ी तेजी से बदले। ब्रिटेन में 1945 में आम चुनाव हुए जिसमें क्लीमेंट एटली, भारी बहुमत के साथ सत्ता में आये। वे श्रमिक दल के नेता थे तथा भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के प्रति सहानुभूति रखते थे। एटली ने भारतीय जनता के प्रतिनिधियों की पहचान हेतु, अपनी पहली कार्रवाई के अंतर्गत भारत में आम चुनाव करवाए तथा दिसम्बर, 1945 में चुनाव परिणाम घोषित किये गए। जनवरी, 1946 में एटली ने अपने कैबिनेट मिशन को भारत भेजने का निर्णय सार्वजनिक किया। मिशन ने लीग के पाकिस्तान संबंधी प्रस्ताव को ठुकरा दिया जिसके कारण लीग, आजादी के रास्ते का रोड़ा बन गया। परन्तु एटली अपनी प्रतिबद्धताओं से बंधे हुए व्यक्ति थे। उन्होंने 20 फरवरी, 1947 को हाउस ऑफ कॉमन्स में ऐतिहासिक घोषणा कर दी की जून 1948 से पहले-पहले अंग्रेज, उत्तरदायी प्रतिनिधियों को सत्ता हस्तान्तरित करके भारत छोड़ देंगे। इस साहसपूर्ण घोषणा का देशभर में स्वागत किया गया। एटली ने तत्कालीन वायसराय को लंदन वापस बुला लिया तथा अपनी घोषणा को लागू करने के स्पष्ट एजेंडा के साथ लॉर्ड माउंटबेटन को भारत का गवर्नर जनरल बनाकर भेजा। मुस्लिम बहुल राज्यों में लीग के वर्चस्व तथा उसके द्वारा खड़े किये गये गतिरोध को देखते हुए माउंटबेटन ने भारत के विभाजन की योजना बनाई। माउंटबेटन योजना के आधार पर ब्रिटिश संसद ने 18 जुलाई, 1947 को भारत के विभाजन के प्रावधान के साथ **भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947** परित कर दिया।

15 अगस्त, 1947 को 200 वर्षों की ब्रिटिश दासता के बाद भारत ने प्रथम बार मुक्ति के महान् सुख का अनुभव किया। 14-15 अगस्त की मध्य रात्रि को 12 बजे जब संपूर्ण विश्व सो रहा था तब भारत में एक नये सूर्य का उदय हुआ। पूरे देश में हर्षोल्लास की लहर दौड़ गई। जगह-जगह मिठाइयाँ बाँटी गईं । शासन के द्वार आम भारतीयों के लिए खुल गये। भारतीय तिरंगा सभी स्थानों पर लहरा उठा जो लाखों स्वतंत्रता सेनानियों के लिए एक समय मात्र एक स्वप्न हुआ करता था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जहां एक ओर भारतीय इतिहास का एक काल खण्ड समाप्त हुआ तो वहीं दूसरी ओर नव भारत के निर्माण का

दूसरा चरण आरंभ हुआ। आजादी के समय देश अनेक छोटे-छोटे रियासतों में विभाजित था जिसके एकीकरण के पावन कार्य में **सरदार वल्लभ भाई पटेल** की अविस्मरणीय भूमिका रही। नव भारत के निर्माण का महान् कार्य आज तक जारी है। इस हेतु हम सब को अपना पूर्ण समर्पण करना चाहिए।

भारतीय संविधान की प्रस्तावना

"हम, भारत के लोग,
भारत को एक
सम्पूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक, गणराज्य
बनाने के लिए और
उसके समस्त नागरिकों को
सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता,
प्रतिष्ठा और अवसर की समता
प्राप्त कराने के लिए तथा
उन सब में व्यक्ति की गरिमा और
राष्ट्र की एकता तथा अखंडता
सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए
दृढ़ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज दिनांक 26 नवंबर 1949 ई.
(मिति मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को एतद्द्वारा इस संविधान को
अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।"

बैंक ऑफ़ इंडिया की कहानी, उसी की जुबानी

मैं, बैंक ऑफ़ इंडिया हूँ। मेरा जन्म 07 सितम्बर, 1906 को तत्कालीन बम्बई में हुआ। उस समय देश में "स्वदेशी आंदोलन" की लहर थी। देश के चोटी के कारोबारी यह समझ चुके थे कि ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रायोजित कारोबारी हित, स्वदेशी कारोबारी हित से अलग हैं। इसी पृष्ठभूमि में सर ससून डेविड के मन में एक बैंक की स्थापना का विचार आया। सर ससून डेविड पूर्व में बम्बई के मेयर रह चुके थे तथा स्वयं को भारतीय कहलाने में गर्व महसूस करते थे। इस हेतु सर ससून डेविड ने सर कावसजी जहांगीर से संपर्क किया जो मुम्बई के बड़े मिल मालिक तथा भू-स्वामी थे। सर कावसजी जहांगीर ने इसमें क्षणभर की भी देरी नहीं की। इस प्रकार मैं अस्तित्व में आया। मेरे निदेशक मंडल की प्रथम बैठक में सर डेविड ससून तथा सर कावसजी जहाँगीर के अतिरिक्त रतनजी दादाभाई टाटा, खेतसी खेसी, गोवर्धन दास खटाऊ, लालूभाई सामलदास, रामनारायण हरनंदराय, जयनारायण हिंदूमल दानी, नूरुद्दीन इब्राहिम आदि शामिल थे। चूँकि मेरे संस्थापकों में हिन्दू, मुस्लिम तथा यहूदी शामिल थे, अत: भारतीय बैंकिंग इतिहास में मुझे पहला धर्मनिरपेक्ष बैंक होने का गौरव प्राप्त है। मुझसे पहले बैंक की स्थापना या तो अंग्रेज करते थे या यूरोपीय सम्प्रदाय के अन्य लोग। मुम्बई के एस्प्लेनेड रोड स्थित ओरिएंटल बिल्डिंग में रु. 50 लाख की प्रदत्त पूँजी तथा 50 कर्मचारियों के साथ मैंने कार्य करना आरंभ किया तथा पहले दो महीनों के बाद ही मैंने 25,177/- रुपए का लाभ कमाया।

आरंभ से ही अनुशासन के साथ तथा परंपरागत परिपाटी पर सतर्कतापूर्वक चलने को मैंने सुरक्षित पाया। यही कारण है कि 1913 में जब कई बैंक औंधे मुंह गिरकर काल के गर्त में समा गये, तब भी मैं इस संकट से सही सलामत बचकर निकल गया। 1920 में भद्र, अहमदाबाद में मेरी पहली शाखा खुली। मुम्बई तथा अहमदाबाद के मेरे ग्राहकों का पूर्वी अफ्रीका से सम्पर्क था। अत: उनकी सुविधा को ध्यान में रखते हुए मेरी पहली विदेशी शाखा 1921 में मोम्बासा (केन्या) में खुली। 1921 में ही बाम्बे स्टॉक एक्सचेंज के क्लियरिंग हाउस को संभालने की जिम्मेदारी मुझे सौंपी गई तथा गर्व के साथ मैं आपको यह बताना चाहूंगा कि आज तक मैं यह जिम्मेदारी सफलतापूर्वक निभा रहा हूँ।

1922-23 में पुन: बैंकिंग क्षेत्र पर संकट आया तथा एक के बाद एक 35 बैंक विफल हो गये परन्तु यह मेरी सतर्कता की नीति का ही परिणाम था कि मेरा कारोबार चलता रहा। 17 अगस्त 1925 को मैंने कलकत्ता (कोलकाता) में पदार्पण किया जो तत्कालीन बॉम्बे प्रांत के बाहर मेरी पहली शाखा थी। 1946 में मेरी लंदन शाखा खुली जिससे मुझे विदेश में शाखा खोलने वाला प्रथम भारतीय बैंक होने का गौरव प्राप्त हुआ।

आरंभ से ही मेरे हृदय में स्वदेशी की भावना विराजमान थी। मैंने भी देश के नागरिकों एवं स्वदेशी कारोबारियों के साथ, अपने देश की स्वतंत्रता के सपने देखे। मुझे उस समय बहुत प्रसन्नता हुई जब 1944 में गांधी जी ने मेरी पुणे मुख्य शाखा में अपना खाता खुलवाया। 15 अगस्त 1947 को जब देश स्वतंत्रता का जश्न मना रहा था तब, अपने मूल में स्वदेशी भावना से युक्त होने के कारण मैंने अपने सभी स्टाफ सदस्यों को कुल 1.20 लाख रुपये का बोनस दिया।

19 जुलाई 1969 को जब 14 प्रमुख बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया तो मैं भी उसमें शामिल था। मैंने राष्ट्रीयकरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी से काम किया। मैंने अनेक गाँवों, कस्बों तथा अर्धशहरी क्षेत्रों में अपनी शाखाएं खोलीं और ग्रामीण बैंकों को भी प्रायोजित किया। मैंने देखा कि गाँवों, कस्बों और अर्धशहरी केन्द्रों में ऋण लेकर आम लोग एवं छोटे कारोबारी अपना जीवन समृद्ध बना रहे हैं। इससे मुझे बहुत संतोष होता है। यह वही "स्वराज" का उद्देश्य था जिसे लेकर मेरे संस्थापक चले थे।

कहा जाता है कि वही संस्था जीवंत रहती है जो बदलते समय के साथ बदलती है। मैंने भी बदलते वक्त के साथ स्वयं को बदलने में कोई देरी नहीं की। दिसम्बर 1978 में ही मैंने "वोस्ट्रो" खातों के कंप्यूटरीकरण का काम आरंभ कर दिया था। 1981 में मैंने अपनी क्रेडिट सूचनाओं का भी कंप्यूटरीकरण कर लिया। 1982 में ऋण पोर्टफोलियो के मूल्यांकन/रेटिंग के लिए हेल्थ कोड सिस्टम आरंभ करने वाला मैं प्रथम बैंक था। 1992-93 में आंतरिक तौर पर विकसित किये गये सॉफ्टवेयर की मदद से मेरे सभी बचत खातों का भी कंप्यूटरीकरण पूरा हो गया। अगस्त 1988 में मेरे नाम एक रिकॉर्ड दर्ज हुआ जब मुंबई स्थित मेरी महालक्ष्मी शाखा का पूरी तरह से कंप्यूटरीकरण किया गया क्योंकि ऐसा करने वाला मैं प्रथम राष्ट्रीयकृत बैंक था। आज भी प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में मैं किसी भी बैंक से कम

नहीं हूँ। एटीएम, आरटीजीएस, स्विफ्ट जैसे पड़ावों से गुजरते हुए, मैं आज इंटरनेट बैंकिंग तथा मोबाइल बैंकिंग के माध्यम से अपने ग्राहकों की 24X7 सेवा देता हूँ।

मेरा पहला पब्लिक इश्यू 1997 में आया था। यथा 31.03.2021 को मेरे कुल शेयरधारकों की संख्या 4,10,305 है।

वर्तमान में पूरे देश में मेरी कुल 5083 शाखाएं हैं जिसमें 65% शाखाएं ग्रामीण तथा अर्धशहरी केन्द्रों में हैं। 5083 शाखाओं को नियंत्रित करने के लिए पूरे देश में मेरे 10 एन.बी.जी तथा 59 आंचलिक कार्यालय कार्यरत हैं। इसके अतिरिक्त मेरी कुल 23 विदेशी शाखाएं भी हैं। जनता की सेवा के लिए देशभर में मेरे 5551 एटीएम दिन-रात कार्य कर रहे हैं। यथा 31.03.2021 को मेरा कारोबार मिश्र 10 लाख करोड़ रुपए के रिकॉर्ड स्तर से ऊपर रहा (रु. 10.37 लाख करोड़)। वित्तीय वर्ष 2020-21 में मुझे 2,160 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ हुआ है। यथा 31.03.2021 को मेरा शुद्ध एन.पी.ए 3.35% तथा प्रावधान कवरेज अनुपात 86.24% के स्तर पर रहा है।

वर्तमान में मेरी 04 घरेलू अनुषंगियाँ हैं - बीओआई शेयर होल्डिंग लिमिटेड, बीओआई एक्सा इन्वेस्टमेंट मैनेजर्स प्रा.लि, बीओआई एक्सा ट्रस्टी सर्विसेज प्रा.लि. तथा बीओआई मर्चेंट बैंकर्स लि. एवं मेरी 04 विदेशी अनुषंगियाँ हैं - पीटी बैंक ऑफ़ इंडिया इंडोनेशिया टीबीके, बैंक ऑफ़ इंडिया (तंजानिया) लिमिटेड, बैंक ऑफ़ इंडिया (न्यूजीलैंड) लिमिटेड तथा बैंक ऑफ़ इंडिया (युगांडा) लिमिटेड। मेरे द्वारा प्रायोजित क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक हैं - मध्यप्रदेश ग्रामीण बैंक (पहले नर्मदा झबुआ ग्रामीण बैंक), विदर्भ कोंकण बैंक तथा आर्यावर्त बैंक (पहले आर्यावर्त ग्रामीण बैंक)। इसके अतिरिक्त मेरी सहयोगी कंपनियाँ हैं - इंडो जाम्बिया बैंक लिमिटेड, एसटीसीआई फाइनैन्स लिमिटेड, एएसआरईसी (इंडिया) लिमिटेड तथा स्टार यूनियन दाई-ईची जीवन बीमा कंपनी लिमिटेड। इस प्रकार मेरे परिवार एवं कारोबार का विस्तार बहुत व्यापक हो गया है। जहाँ एक ओर मैं छोटे से गाँव और कस्बे में मौजूद हूँ वहीं दूसरी ओर मैं महानगरों एवं विश्व की आर्थिक राजधानी, न्यूयार्क में भी मौजूद हूँ। जहाँ एक ओर मैं साधारण बचत खाता खोलता हूँ वहीं दूसरी ओर मेरे यहाँ बीमा, म्यूचुअल फंड, गोल्ड बॉण्ड, एक्सपोर्ट क्रेडिट आदि कई प्रकार के उत्पाद उपलब्ध हैं। मुझे समय-समय पर एमएसएमई, कृषि आदि अनेक क्षेत्रों में पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। 2020 में मुझे इकोनॉमिक

टाइम्स द्वारा बैंक श्रेणी में देश का दूसरा सबसे विश्वसनीय ब्रांड घोषित किया गया है। यह सब मेरे ग्राहकों के प्यार और भरोसे का ही नतीजा है।

मैंने 115 वर्षों की अपनी यात्रा में किसान, श्रमिक, नौजवान, उद्योगपति आदि सभी वर्गों के सुख-दुख को एक पारिवारिक सदस्य के रूप में सुना है। इसलिए मेरे ग्राहक मुझे एक बैंक से ज्यादा, अपने परिवार का सदस्य मानते हैं। यही मेरी सबसे बड़ी जमापूँजी है - **रिश्तों की जमापूँजी"**

हाल की कोविड महामारी में भी मैंने अपने प्रिय ग्राहकों का साथ नहीं छोड़ा और मेरे स्टाफ सदस्य अपनी जान को जोखिम में डालकर, सभी वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कार्य करते रहे। कोरोना महामारी ने वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला को अस्त-व्यस्त कर दिया। इस चुनौती को अवसर में बदलने के लिए सरकार ने "आत्मनिर्भर अभियान" आरंभ किया। स्वदेशी भावना से युक्त इस अभियान को सफल बनाने के लिए मैं भी पूरे मनोयोग के साथ योगदान दे रहा हूं और सभी वर्ग के जरूरतमंदों को वित्तीय सहायता दे रहा हूं। इस दौरान मैंने आम नागरिकों को कोविड व्यक्तिगत ऋण स्वीकृत किए ताकि उन्हें आर्थिक तंगी का सामना न करना पड़े। "पी.एम स्वनिधि" के अंतर्गत मैंने रोड पर ठेला-रेहड़ी लगाने वाले सबसे छोटे, परन्तु सबसे आधारभूत व्यापारी भाइयों को भी ऋण स्वीकृत किए। आपदा छोटे-बड़े का भेद नहीं करती। इस आपदा ने छोटे-बड़े सभी को प्रभावित किया। अत: सभी का ध्यान रखते हुए मैंने ऋण की चुकौती में रियायतें दीं। साथ ही लॉकडाउन के दौरान चुकौती न करने से आम लोगों एवं कारोबारियों पर "ब्याज पर ब्याज" का अनुचित बोझ न पड़े, इसके लिए मैंने पहले से ही प्रावधान कर लिए। ये तो केवल कुछ उदाहरण हैं। राष्ट्र का एक अभिन्न हिस्सा होने के कारण मेरे लिए अपने कारोबारी हितों के साथ-साथ राष्ट्रीय प्राथमिकताएं भी महत्वपूर्ण हैं और इन प्राथमिकताओं को मैं यथासमय पूरा करता रहा हूं।

अपने सम्माननीय ग्राहकों तथा समाज के सभी वर्गों के उत्थान के लिए मैं सदैव तत्पर हूं।

"बैंक ऑफ़ इंडिया - रिश्तों की जमापूँजी"

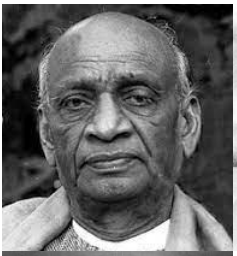
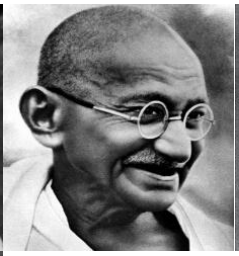
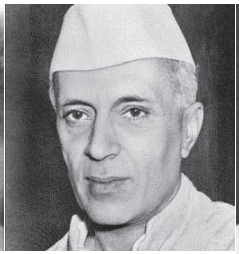
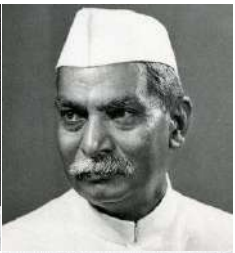

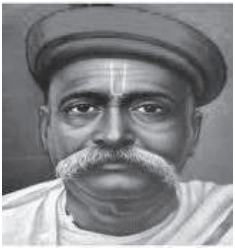

तुम भूल न जाओ उनको
इसलिए कही ये कहानी
जो शहीद हुए हैं उनकी
जरा याद करो कुर्बानी....

संकलन : राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय

बैंक ऑफ़ इंडिया
रिश्तों की जमापूँजी

प्रधान कार्यालय :

राजभाषा विभाग, स्टार हाउस-I, दूसरी मंजिल, सी-5 "जी" ब्लॉक,
बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बांद्रा (पूर्व), मुंबई -400 051

फोन: 022 6668 5648 ई-मेल: Headoffice.Hindi@bankofindia.co.in